

वर्ज्य वि. (तत्.) दे. वर्जनीय।

वर्ण पुं. (तत्.) 1. रंग 2. वैदिक दृष्टि से चार वर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र 3. जाति, रूप, आकृति 4. देवनागरी वर्णमाला की इकाइयाँ जैसे- अ, ई, क, स आदि 5. चित्र 6. तसवीर

वर्णक पुं. (तत्.) 1. रंग 2. रंग-रूप निखारने वाला प्रसाधन, उबटन, अंगराग 3. सिंदूर 4. चंदन 5. वेषभूषा, लिबास, पहनावा 6. चारण, भाट।

वर्णकुट्टिम पुं. (तत्.) आभूषणों अथवा अन्य वस्तुओं को सुशोभनीय बनाने के लिए आलंकारिक अंश जड़ने की कला, पच्चीकारी।

वर्णक्रम पुं. (तत्.) 1. वर्णमाला के वर्णों का क्रम 2. ब्राह्मण आदि वर्णों का क्रम 3. शृंखला, सिलसिला।

वर्णखंड पुं. (तत्.) मेरु अंकित कर पद्य की पंक्तियों के गण निश्चित करने की सामान्य प्रक्रिया के विपरीत, पिंगल शास्त्र में, बिना मेरु अंकन के निश्चित वर्णों के वृत्त पहचानने की व्यवस्थित विधि।

वर्णच्छटा स्त्री. (तत्.) विभिन्न रंगों के संयोजन से उत्पन्न सुंदर छटा, विभिन्न वर्णों के आकर्षक इस्तेमाल से निर्मित दृश्य का सौंदर्य।

वर्णतूलिका स्त्री. (तत्.) चित्र बनाने की तूलिका, चित्रकार का ब्रश।

वर्णदंडक पुं. (तत्.) प्रत्येक चरण में 26 से अधिक वर्णों वाला समवर्णिक छंद, जिस में गणों के क्रम का बंधन न हो।

वर्णद पुं. (तत्.) 1. रंगरेज, रंगकार, रंग करने वाला रंगसाज 2. रतन जोत नामक सुगंध वाली लकड़ी।

वर्णदोष पुं. (तत्.) 1. रंग के कारण उत्पन्न दोष, रंगों का गलत तालमेल 2. सामाजिक दृष्टि से जातियों का अनावश्यक बंधन 3. वर्णों के त्रुटिपूर्ण प्रयोग से पद्यात्मक पंक्ति में उत्पन्न दोष।

वर्णधर्म पुं. (तत्.) समाज के विभिन्न वर्णों का जाति आधारित कर्तव्य, जाति विशेष के अपने कायदे-कानून।

वर्णन पुं. (तत्.) 1. वस्तु अथवा स्थिति के विषय में विस्तृत कथन, व्याख्या, चित्रण 2. रंगों का प्रयोग, रंगने की क्रिया।

वर्णना स.क्रि. (तद्.) किसी घटना, वस्तु अथवा स्थिति का वर्णन करना।

वर्णनातीत वि. (तत्.) जिसका वर्णन संभव न हो, व्याख्या के परे, अवर्णनीय।

वर्णनात्मक वि. (तत्.) जिसमें किसी वस्तु या स्थिति का वर्णन किया गया हो, विस्तृत, व्याख्यात्मक, सभी अंगों-उपांगों की विस्तृत व्याख्या वाला।

वर्णनीय वि. (तत्.) 1. वर्णन करने योग्य 2. सबको बताया जाने वाला, वर्ण्य।

वर्णानुक्रमिक वि. (तत्.) वर्णमाला क्रम के अनुसार, भाषा की निश्चित वर्णमाला के क्रम पर आधारित।

वर्णपरिप्रेक्ष्य पुं. (तत्.) चित्रित वस्तु की गहराई और दूरी का भी आभास कराने वाला, चित्र, त्रिआयामी चित्र, रंग-परिप्रेक्ष्य। colour perspective

वर्णपात्र पुं. (तत्.) रंग अथवा रंगों का डिब्बा, चित्रकला आदि में वह डिब्बा जिसमें बने हुए छोटे-छोटे खानों में रंगों के जमे हुए टुकड़े रखे जाते हैं, चित्रकार का एक उपकरण।

वर्ण प्रकर्ष पुं. (तत्.) 1. रंगों का सुंदर सामंजस्य 2. रंग का उत्तम प्रयोग।

वर्णप्रभा स्त्री. (तत्.) रंग की चमक-दमक, वर्ण-दीप्ति।

वर्ण प्रस्तार पुं. (तत्.) छंद शास्त्र में निर्दिष्ट वर्णों के वृत्तों के निश्चित भेद तथा स्वरूप पहचानने की प्रक्रिया।

वर्ण भेद पुं. (तत्.) 1. रंगों का अंतर 2. ब्राह्मण आदि वर्णों के लोगों में माना जाने वाला भेद और अंतर 3. त्वचा के काले, गोरे, पीले, सांवले आदि रंगों के आधार पर जातियों में किया जाने वाला पक्षपात पूर्ण भेदभाव 4. नस्लों के रंगों के